देव पूजा विधि Part-20 सत्यनारायण पूजा विधि

जगदानन्द झा 2:29 am 1 टिप्पणी

सत्यनारायण व्रत करने वाला व्यक्ति सङ्क्रान्ति, पूर्णिमा, एकादशी या जिस किसी दिन शाम को पवित्र होकर धोती पहनकर, दीपक जलाकर आचमन आदि कर संकल्प करे -

ॐ विष्णुः 3 अद्येहेत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं समस्तदुरितोपशमनार्थं सकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथा सम्पादितसामग्र्या गणेश-गौरी- वरुणदेवता- दिपूजनपूर्वकं श्रीसत्यनारायणपूजनं तत्कथाश्रवणञ् च करिष्ये। इति सङ्कल्प-

गौरी गणेश पूजन कलश स्थापन-पूजन षोडशोपचार से कर तदनन्तर सत्यनारायण की पूजा करें।

जौ से प्रतिष्ठा-ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोर्जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। व्श्विेदेवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः सुवर्णप्रतिमायां श्रीसत्यनारायणदेव इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

पीठपूजन-ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्न्यै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानायै नमः, मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः, ॐ नमो भगवते सर्वदेवात्मने सर्वात्मसंयोगपीठात्मने सत्यनारायणाय नमः।

प्राणप्रतिष्ठा-ॐ आँ, ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ श्री सत्यनारायणदेवस्य जीवः सर्वेन्द्रियाणि वाक् मनः प्राणाः चक्षुः श्रोत्रां जिह्वा घ्राणादयं इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ध्यान- ध्यायेत् सत्यं गुणातीतं गुणत्रायसमन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्।।
नीलवर्णं पीतवस्त्रां श्रीवत्सपदभूषितम्।
गोविन्दं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम्।।

आवाहन- दामोदर समागच्छ लक्ष्म्या सह जगत्पते !
इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम !।।

आसन- नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।

Search

Popular Tags Blog Archives

लोकप्रिय पोस्ट

देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन
इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार , व्रतोद्यापन , हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...

संस्कृत कैसे सीखें
इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...

तर्पण विधि
प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बायें और दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैंती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अच्सन्धि-प्रकरणम्)
अथ अच्सन्धिः If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

आसनं देवदेवेश ! गृहाण पुराषोत्तम !।।

पाद्य- नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक ! ।

पाद्यं गृहाण देवेश! मम सौख्यं विवर्द्धय।।

अर्घ्य- व्यक्ताऽव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपतये नमः।

मया निवेदितो ह्यघ्र्यो भक्त्याऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

आचमन- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां त्वया।।

स्नान- गङ्गा च यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती।

तीर्थानां पावनं तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नान- स्नानं पञ्चामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम ! ।

अनाथनाथ ! सर्वज्ञ ! गीर्वाणपरिपूजित !।।

शुद्धे जल से स्नान-परमानन्दतोयाऽब्धौ निमग्नतव मूर्तये।

साङ्गोपाङ्गिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे।।

शरीर प्रोक्षण हेतु वस्त्र-वेदसूत्रासमायुक्ते यज्ञसामसमन्विते।

सर्ववर्णप्रदे देव वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्र के पश्चात आचमन करायें-

यज्ञोपवीत- ब्रह्माविष्णुमहेशैश्च निर्मितम् ब्रह्मसूत्राकम्।

यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां कमलापतिः।।

पुनः आचमन करायें-

चन्दन- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत-अक्षत के स्थान पर जौ समर्पित करें।

पुष्प- सुगन्धीनि सुपुष्पाणि देशकालोद्भवानि च।

मयाऽऽनीतानि पूजार्थ पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।

तुलसीदल चढ़ावें

जौ से अङ्गपूजन करे-ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि, ॐ माधवाय नमः जानुनी पूजयामि, ॐ कामपतये नमः गुह्यं पूजयामि, ॐ वामनाय नमः कटिं पूजयामि, ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि, ॐ विश्वमूर्तये नमः कण्ठं पूजयामि, ॐ सहश्रबाहवे नमः बाहुं पूजयामि, ॐ योगिने नमः चक्षुषी पूजयामि, ॐ उरगासनाय नमः ललाटं पूजयामि, ॐ नाकेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि, ॐ श्रवणेशाय नमः श्रवणे पूजयामि, ॐ सर्वकामप्रदाय नमः शिखां पूजयामि, ॐ सहश्रशीर्षे नमः शिरः पूजयामि, ॐ सर्वरूपिणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूप- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप- साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह।।

नैवेद्य - घृतपक्कं हविष्यान्नं पायसं च सशर्करम्।

नानाविधं च नैवेद्यं विष्णो मे प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्य के बाद आचमन-सर्वपापहरं दिव्यं गाङ्गेयं निर्मलं जलम्।

आचमनं मया दत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम ! ।।

ताम्बूल- लवङ्गकर्पूरयुतं ताम्बूलं सुरपूजितम्।

प्रीत्या गृहाण देवेश ! मम सौख्यं विवर्धय।।

फल- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

आभूषण के स्थान पर द्रव्य चढ़ावें, क्षण पर्यन्त ध्यान करके श्री सत्यनारायणाय नमः का यथाशक्ति जो संभव हो जप करें।

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

खोज

लेखानुक्रमणी

प्रार्थना- गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणाऽस्मतकृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर!।।

आरती- चतुर्वर्तिसमायुक्तं गोघृतेन च पूरितम्।
नीराजनेन सन्तुष्टो भवत्येव जगत्पतिः।।
अनन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्याऽमितप्रभम्।
आरार्तिकमिदं देव गृहाण मदनुग्रहात्।।

विशेषार्घ्य (फल एवं पुष्प के साथ) -नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने !।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश! गृहाणाऽर्घ्यं जगत्पते !।।
दामोदर जगन्नाथ ! भक्तानां भयनाशन।
मया निवेदितं भक्त्या गृह्यतामर्घ्यमच्युत।।

पुष्पाञ्जलि- यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रां पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितञ्च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया।।
मन्त्राहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन!।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

प्रार्थना- अमोघं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्।
हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम्।।
गुणत्रायं गुणातीतं गोविन्दं गरुणध्वजम्।
जनार्दनं जनातीतं जानकीवल्लभं हरिम्।।
प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतःपरम्।
दुर्गमे विषमे घोरे शत्राुभिः परिपीडते।।
निस्तारयस्व सर्वेषु तथाऽनिष्टभयेषु च।
नामान्येतानि सङ्कीत्र्य वाञ्िछतं फलामाप्नुयात्।।
सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं विभुम्।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः।।

प्रदक्षिणा- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।।

चन्दन पुष्पमालादि से व्यास की पूजा कर दें, वरण सामग्रीं लेकर वरण करें - एभिर्गन्धाक्षत पत्रा-पुष्प-पूगीफल-द्रव्यैः श्रीसत्यनारायणकथाश्रवणकर्मणि व्यासकर्मकर्तुं व्यासत्वेन त्वामहं वृणे। व्यास कहें- वृतोऽस्मीति,

व्यास-प्रार्थना- नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे ! फुल्लारविन्दायतपत्रानेत्रा !।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयप्रदीपः।।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मविधये वसिष्ठाय नमो नमः।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणिः।।
मङ्गलाचरण-नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।
जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनो व्यासः।
यस्याऽऽस्य कमलगलितं वाङ्मयममृतं जगत् पिबति।।
निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।
पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः।।
ये देवा सन्तिः मेरौ वरकनकमये मन्दरे ये च यक्षाः।
पातालं ये भुजङ्गा फणिमणिकिरणध्वस्तमोहान्धकाराः।।
कैलासे स्त्रीविलासात् प्रमुदितहृदया ये च विद्याधराद्यास्ते
मोक्षद्वारभूतं मुनिवरवचनं श्रोतुमायान्तु सर्वे।।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।

यत् कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।

Share: f 🐦 G+ in

जगदानन्द झा
लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता,निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुडा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते है। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट मुख्यपृष्ठ पुरानी पोस्ट →

1 टिप्पणी:

Unknown 8 मार्च 2019 को 8:03 am

Namskaram
M also sanskrit lover.
As m a learner of sanskrit
Yor blog is fantastic
Keep it up

जवाब दें

मास्तु प्रतिलिपिः

इस ब्लॉग के बारे में

संस्कृतभाषी ब्लॉग में मुख्यतः मेरा

> वैचारिक लेख, कर्मकाण्ड,ज्योतिष, आयुर्वेद, विधि, विद्वानों की जीवनी, 15 हजार संस्कृत पुस्तकों, 4 हजार पाण्डुलिपियों के नाम, उ.प्र. के संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि के नाम व पता, संस्कृत गीत

आदि विषयों पर सामग्री उपलब्ध हैं। आप लेवल में जाकर इच्छित विषय का चयन करें। ब्लॉग की सामग्री खोजने के लिए खोज सुविधा का उपयोग करें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 2

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 3

SANSKRITSARJANA वर्ष 2 अंक-1

मेरे बारे में

जगदानन्द झा

मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 1

समर्थक एवं मित्र

Followers (277) Next

Follow

RECENT POSTS

अव्यवस्थित सूची

लेखाभिज्ञानम्

बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है।
इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।